

( 4 )

सद्गावना सप्ताह पर

राष्ट्र जब बढ़ने लगा था आपके नेतृत्व में ।  
 वृद्धि जब होने लगी थी, आपसी भ्रातृत्व में ।  
 हुए सब तत्पर बढ़े अगली शती की ओर थे ।  
 नए सर्जन हेतु उठते स्वर अहा चहुँ ओर थे ॥ 1 ॥

तभी हिंसा सर्पिणी चुपचाप आ पहुँची वहाँ ।  
 मिल रहा था बन्धुओं से लाल भारत का जहाँ ।  
 हुआ भीषण शब्द डूबा सभी कुछ आतंक में ।  
 भर लिया उसको भयावह मृत्यु ने फिर अंक में ॥ 2 ॥

हो गया है क्या हमें ऐसे नहीं थे हम कभी ।  
 त्याग तप निष्ठा क्षमा थे भारतीयों में सभी ।  
 स्नोत यह फूटा कहाँ से छल कपट का क्रोध का।  
 क्या हुआ उस सभ्यता के धर्म के उस बोध का ॥ 3 ॥

नहीं जग यह चाहता यह देश गौरव युक्त हो।  
 गरीबी असमानता अन्याय से यह मुक्त हो।  
 रहेगा यदि शान्त होगा शक्तिशाली देश यह ।  
 बनेगा नायक धरा का छोड़ निर्धन वेश यह ॥ 4 ॥

भेद के विष बीज बोओ बढ़ाओ कुछ कलह को।  
 भेज दो कुछ शख्त फिर आओ कराने सुलह को।  
 यही है वह जाल जिसमें हमें फँसना है नहीं ।  
 द्रेष दलदल में हमें हे बन्धु धंसना है नहीं ॥ 5 ॥  
 पुनः यह पहचान लो बस एकता में शक्ति है।  
 वही नर है मातृ भू में अचल जिसकी भक्ति है।  
 कुचल दो उस शक्ति को जो मातृ भूमि विरुद्ध हो।  
 द्रोह छल हिंसा करो तुम दूर भारत शुद्ध हो ॥ 6 ॥

बैलगाड़ी अब नहीं इस देश की पहचान है।

दूर करना प्रविधि का अब पश्चिमी अभिमान है।  
जगाकर तुम चल दिए इस देश को हे वीर वर।  
अब न ठहरेंगे उड़ेगें व्योम को भी चीरकर ॥ 7 ॥

शिव कुमार मिश्र-